आखर हिंदी पत्रिका ; e-ISSN-2583-0597 खंड 6/अंक 3/सितंबर 2026
Received: 18/10/2026; Accepted: 20/10/2026; Published: 28/10/2026

साक्षात्कार

सुप्रसिद्ध ललित निबंधकार डॉ. श्रीराम परिहार, मध्यप्रदेश

नरपत लाल
गाँव-हरियाली, पोस्ट-बेदाना, तहसील-आहोर,
जिला-जालोर (राज.) 307030
मोबाइल नं.- 7891981898
ई.मेल- baradanarpat@gmail.com

नरपत लाल, सुप्रसिद्ध ललित निबंधकार डॉ. श्रीराम परिहार, आखर हिंदी पत्रिका, **खंड 6/अंक 3/सितंबर 2026**,(360-371)
https://doi.org/10.5281/zenodo.23926394

This work is licensed under CC BY-NC 4.0

कर्ता– नरपत लाल, शोधार्थी, हिंदी विभाग, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर, राजस्थान

***नरपतलाल*:-** प्रणाम महोदय,

डॉ. श्रीराम परिहार, नमस्कार।

***नरपत लाल*:- सर, साहित्य जगत में आपका बड़ा नाम है, मेरी जिज्ञासा है कि सर्वप्रथम हिंदी साहित्य के प्रति रुचि कैसे उत्पन्न हुई ?**

***डॉ. श्रीराम परिहार*:-** जी, हमारे निमाड़ क्षेत्र में सिंगाजी का बहुत बड़ा मेला लगता है, वहाँ से मेरे पिताजी ने 'रामचरित मानस' खरीदी। उन्होंने कहा- तुम मुझे 'मानस' पढ़कर सुनाओ। पिताजी का नियमित अपना खेती-बाड़ी, ढ़ोर-ढ़गर का काम निपटा कर, भोजन करके रोज मुझे पास में बिठाकर कहते थे कि रामचरित मानस पढ़कर सुनाओ। उसी नित्य क्रम से भारतीय संस्कृति और भारतीय परंपराओं को समझने की कोशिश करते रहने से हिंदी साहित्य के प्रति रुचि जाग्रत हुई। रामचरित मानस में इतने संदर्भ आते हैं जिनके माध्यम से शब्द ज्ञान व शब्द भंडार वृद्धि करने में मदद मिली। उसके बाद सबसे ज्यादा योगदान मेरी माँ का रहा। माँ लोक साहित्य की बहुत मर्मज्ञ थी। उन्हें कई लोक-गीत हर अनुष्ठान याद थे। उनको मैं सुनता था, जब माँ सुबह दही बिलोती, घट्टी (चक्की) पिसती थी, तो बिना गीत गाए काम होता ही नहीं था। बड़ा होने के बाद मुझे यह समझ विकसित हुई कि जितना ज्ञान शास्त्र के पास है, उससे भी ज्यादा तो लोक के पास है। इस तरह लोक और शास्त्र दोनों का प्रभाव स्वरूप ही साहित्य में रुचि बढ़ती गयी।

***नरपत लाल*:- जी, आपको सबसे पहले लेखन की प्रेरणा कहाँ से मिली ?**

***डॉ. श्रीराम परिहार*:-** लेखन की प्रेरणा सर्वाधिक रूप से मुझे 'प्रकृति' से मिली। मेरे गाँव के उत्तर में विंध्याचल, दक्षिण में सतपुड़ा बीच में नर्मदाजी बहती है। उससे 10-12 किलोमीटर दूर मेरा गाँव (फेफरिया) है। पिताजी, माँ हर अमावस्या को बैलगाड़ी से नर्मदा के एक नाव घाट (अनगढ़ घाट) पर जाते थे। चौदस की रात में चले जाते, फिर रातभर वहीं रेत में विश्राम करते थे। हम लोगों की दाल-बाटी वहीं बनती थी। सुबह पूजा अनुष्ठान स्नान आदि, नर्मदा जी की आरती फिर घाट पर जो साधु-संन्यासियों के आश्रम बने हुए थे, वहाँ दान दे कर घर आते थे। यह क्रम पिताजी जब तक रहे, तब तक चलता रहा। वे संस्कार कहीं न कहीं, जब-जब विंध्याचल को देखता, आँगन में खड़े होकर सतपुड़ा की सुषमा निहारता, नर्मदा की कल-कल धारा का निर्मल जल प्रवाह और पहाड़ों पत्थरों को फोड़ती हुई उसकी संघर्षशीलता उसने मुझे बहुत प्रभावित किया। फिर मैं किसान का बेटा हूँ और पिताजी के साथ किसानी का काम किया है। किसानी का काम करते समय पिताजी कहते थे कि ये जो चिड़िया बोल रही है तो 8 दिन बाद बारिश होगी। पुराने वृक्षों में तीन पत्तियाँ निकल आई है, अब बिल्कुल बारिश 15 दिन बाद आने वाली है। जानवरों को चराते-चराते मैंने 'साकेत' को तथा 'प्रिय-प्रवास' को मेरे खेत के कुएँ की मुंडेर पर बैठकर पढ़ा। इस तरह से संस्कार विकसित होते रहे। फिर हिंदी की शब्दावली और हिंदी की गहराई और उसके माध्यम से भारतीयता को जानने का अनुभव मुझे प्राप्त हुआ।

मेरे माता-पिता, मेरे खेत-खलिहान, मेरा विंध्याचल, मेरा सतपुड़ा, मेरी कोशल्या जैसी नर्मदा मैया, पशु-पक्षी, आकाश, धरती, बरसात, शरद हेमंत, शिशिर इन सब ने मुझे बहुत प्रेरित किया। मेरी समझ विकसित हुई कि ऊर्जा प्रकृति के भीतर है तो व्यक्ति के भीतर भी होती है। प्रकृति निरंतर सर्जन करती है तो व्यक्ति क्यों नहीं सृजन कर सकता? 'रामचरितमानस' का शब्द ज्ञान, माँ से लोक-साहित्य और लोक संस्कृति को जानना

और प्रकृति इन सबसे मिलकर मेरे लेखन की शुरूआत होती है इसलिए मेरे निबंधों में संस्कृति है, भारतीयता है, नर्मदा है।

***नरपत लाल*:- सर आपकी पसंदीदा पुस्तकें जिन्हें आप बार-बार पढ़ते हैं या पढ़ी है।**

***डॉ. श्रीराम परिहार*:–** एक तो 'रामचरित मानस' जिसका मैंने अभी तक अपने जीवन में शताधिक बार पूरी तरह से पारायण किया है। हमारे गाँव में हर वर्ष रामायण का परायण प्रत्येक घर में होते हुए पूरे गाँव में होता था। इसलिए मुझे बचपन से ही रामचरित मानस के प्रति लगाव उत्पन हुआ। जयशंकर प्रसाद की 'कामायनी' को 50 से अधिक बार पढ़ डाला। लेकिन फिर भी कामायनी के अर्थ नये-नये सन्दर्भों में मुझे बार-बार प्रेरित करते हैं। फिर मुझे अज्ञेय बहुत प्रिय है विशेषकर उनका 'चिंतन साहित्य' जो निबंध बहुत अच्छा लगता है। कभी कभी मैं धर्मवीर भारती की पुस्तकों को भी बड़े छांव से पढ़ता हूँ। मुझे प्राचीन ग्रंथ, उपनिषद्, श्रीमद्भागवत, वाल्मीकि रामायण तथा श्रीमद्भागवत गीता के 12 वें अध्याय का पाठ रोज करता हूँ, दुर्गासप्तशती ये तो रोज नियमित पाठ के विषय है।

***नरपत लाल*:- सर हर लेखक का अपना एक आदर्श होता है क्या आपका भी कोई आदर्श लेखक या लेखिका है।**

***डॉ. श्रीराम परिहार*:–** मेरे जीवन में मेरे दो आदर्श लेखक रहे हैं, एक गोस्वामी तुलसीदास जी और दूसरे जयशंकर प्रसाद जी।

***नरपत लाल*:- सर, आपने साहित्य लेखन के लिए साहित्य की अन्य विधाओं की अपेक्षा ललित निबंध विधा को ही क्यों चुना ?**

***डॉ. श्रीराम परिहार*:-** मुझे प्रकृति ने हमेशा ही प्रेरित किया है। प्रकृति में जो सौंदर्य है, वह सौंदर्य विकसित होता है। जैसे कल तो एक पौधे के वृंत पर कली थी। आज पुष्प कैसे बन गई? वह कौन-सा तत्व है, जिनसे फूल पर बैठी हुई मधुमक्खी फूल को कोई बिना नुकसान पहुँचाएँ उसमें से मधु ग्रहण कर लेती है। वह क्या बात होती है कि किसान फसल बोता है और फसल दो-तीन महीने में बड़ी होकर के उसमें फूल भी आ जाते हैं, उसमें दाने भी आ जाते हैं फिर उसमें दूध जैसा स्वाद और फिर हमारे प्राणमय कोश, अन्नमय कोश, मनोमय कोश, विज्ञानमय कोश और आनन्द मय कोश को पुष्ट करती रहती है, तो ये कोई 'लालित्य' जैसा कोई तत्व है। जब एक राष्ट्र पूरे अभिमान के साथ अपने स्वाभिमान की रक्षा के लिए खड़ा होता है तो उसमें भी लालित्य होता है, शौर्य का भी लालित्य होता है। मैं नर्मदा के किनारे बैठ करके नर्मदा मैया को पुकारता हूँ तो खड़ी हो जाती है। नदी केवल जल की धारा नहीं है जल के रूप में वह लालित्य का शाश्वत तत्व है जिसने सृष्टि का निर्माण करने में बड़ी भूमिका निभाई है। एक बात और कह रहा हूँ कि मैं गाँव में पैदा नहीं होता तो मैं 'ललित निबंधकार' नहीं बनता। गाँव, प्रकृति, जंगल, जानवर आदि ने अनेक अनुभव दिए।

नरपत लाल **:- सर, आपके द्वारा ललित निबंध एवं नवगीत केंद्रित 'अक्षत पत्रिका' का प्रकाशन होता है। इस पत्रिका के बारे में बताइये ?**

डॉ. श्रीराम परिहार :- मुझे ध्यान में आया कि ललित निबंध और नवगीत को बहुत कम लोग लिख रहे हैं। इसे थोड़ी बहुत उपेक्षित या हास्य पर जाने वाली विधा समझ रहे है जबकि भारतीय संस्कृति की मूल अभिव्यक्ति विधा है। नवगीत हमारे जीवन के लय से जुड़ा हुआ है, प्रकृति की लय से जुड़ा हुआ है तो प्रेरणा मिली कि क्यों न एक इस तरह की पत्रिका निकालें और तब से निकालना शुरू किया। इस पत्रिका को पूरे देश ने बहुत सम्मान दिया। नवगीत और ललित निबंध दो ही विधा पर केंद्रित है और इन दोनों से संबंधित प्रकाशित पुस्तकों की समीक्षा उसमें छपती है। इन पर आधारित आलेख प्रकाशित होते हैं। अब यह पत्रिका कोरोना काल से बंद हो गयी है।

नरपत लाल **:- सर आपके निबन्ध साहित्य में पर्व-त्योहार, उत्सव, रीति-रिवाज तथा सांस्कृतिक जीवन मूल्यों का विवेचन मिलता है। भारतीय संस्कृति के प्रति सम्मोहन का क्या कारण रहा ?**

डॉ. श्रीराम परिहार :- भारतीय संस्कृति इन्हीं पर्वों-त्योहारों का तो समुच्चय है। भारतीय संस्कृति है क्या? भारतीय संस्कृति हमारी लोक संस्कृति से ही तो निकली हुई है, जो कुछ प्रकृति में है जो कुछ मनुष्य की गतिविधि प्रकृति के साथ जुड़ी हुई है यथा नदियों, पहाड़ों, फसलों, पशु-पक्षियों, धरती, आकाश, वर्षा और इनसे जुड़े हुए अनुष्ठान से भारतीय संस्कृति बनी है। इनके बीच में ही मेरा बचपन बीता है। मैं छोटे से बड़ा इन्हीं संस्कारों के बीच में हुआ हूँ। इन संस्कारों, अनुष्ठानों का बना रहना बहुत जरूरी है।

ये अनुष्ठान वैज्ञानिक हैं लेकिन तथाकथित आधुनिकता वाली सोच ने इनको जो अलग नजरिये से देखना शुरू किया, वह बिल्कुल ठीक नहीं है। इन अनुष्ठानों की गहराई को, उसके पीछे जन-कल्याण, लोक-मंगल की भावना को समझने की कोशिश करनी चाहिए और यह प्रत्येक भारतीय लेखक का दायित्व होना चाहिए।

नरपत लाल **:- जी सर, पढ़ते हुए ध्यान में आया कि आपके ललित निबंध साहित्य में ग्रामीण जीवन, ग्रामीण परिवेश, ग्रामीण समाज प्रकृति के समीप तथा ग्रामीण समुदाय के बदलते स्वरूप को चित्रित किया गया है। इस बारे में अवगत करावें।**

डॉ. श्रीराम परिहार :- मैं गाँव में ही पैदा हुआ हूँ, ग्रामीण परिवेश में पला-बढ़ा। जिस परिवेश में व जिस समय में व्यक्ति जी रहा है उसकी रचना में वह आयेगा ही, इसलिए मेरी रचनाओं में स्वाभाविक रूप से आया है, सायास नहीं है। मैंने देखकर नहीं लिखा है, जी कर लिखा है। दिल्ली वाला लेखक देख के लिखता है। रेल के डिब्बों में से देखकर के लिखता है कि हल चला रहा है और मैंने तो हल चलाया है। दोनों में फर्क तो आयेगा ही।

***नरपत लाल*:- धन्यवाद सर, मैं और जानना चाहता हूँ कि आपने पुस्तक प्रकाशन के लिए विचार कैसे बनाया या कहूँ कि कैसे प्रेरित हुए ?**

***डॉ. श्रीराम परिहार* :-** निबंध इकट्ठे हो गये तो निबंध लिखने के बाद कुछ मित्रों की सलाह से पत्रिकाओं में भेजना शुरू किया। मेरा 1985-86 में पहला निबंध 'कादम्बिनी' पत्रिका में 'आकाश प्रिया और मेघ काव्य' नाम से प्रकाशित हुआ। उसके बाद 'धर्मयुग' पत्रिका में तो लगातार निबंध प्रकाशित होते रहे। धर्मवीर भारती का इतना स्नेह मेरे प्रति था कि निमाड़ी की लौकिक पृष्ठभूमि में लिखे निबंधों को बिना शब्द बदले हूबहू प्रकाशित कर देते थे, तो परिणाम यह हुआ कि मैंने निमाड़ी लोक भाषा के शब्दों को साहित्य में प्रतिष्ठित किया। आज भी साहित्य की यह महती आवश्यकता है, जिसे धर्मवीर भारती ने बहुत पहले ही पहचान लिया था।

अपनी लोक भाषा के शब्दों का प्रयोग कीजिए। तुलसी जैसा बड़ा कवि संस्कृत का प्रकांड विद्वान होते हुए भी अवधी में लिखता है। ये हमारे संतों ने बहुत प्रेरणा दी है। अपनी भाषा के प्रति अनुराग तो होना ही चाहिए क्योंकि हमारी भाषा की जो अर्थ गांभीर्य है वो वैसे के वैसे अर्थ के सन्दर्भ में हम दूसरी भाषा के शब्द के माध्यम से नहीं कर सकते। मेरी 'साँझ' में और उनकी 'इवनिंग' में बहुत फर्क है अपनी भाषा में सोचिए। मैं भाषा में मिलावट को मैं पसंद नहीं करता। मैं तो भाषा के शुद्धीकरण के लिए शुद्धतावादी व्यक्ति हूँ, जो भी लोग ये कह रहे है कि आज ये थोड़ी चलेगा तो आप मत चलाइए। हम भाषा, संस्कृति, सभ्यता, खान-पान, रहन-सहन की दृष्टि से इतने संपन्न हैं तो हमारी संपन्नता का उपयोग होना चाहिए। ध्यान में आता है कि पचास साल की पूरी की पूरी पीढ़ी मिलावट से भरी हुई है और ये पढ़ें लिखे लोग कर रहे हैं, उनका अनुकरण गाँव का आदमी कर रहा है, इसलिए पढ़ें-लिखे व्यक्ति को राष्ट्र की हर धरोहर को सुरक्षित रखने के लिए सजग होना चाहिए। उसमें भाषा एक बड़ा तत्व है।

***नरपत लाल*:- आपके जीवन की कोई ऐसी प्रेरक घटना बताइए। जो आपके हृदय पर अमिट छोड़ी हो ?**

***डॉ. श्रीराम परिहार* :-** ऐसी कोई घटना तो ध्यान में नहीं आती पर नर्मदा परिक्रमा वासियों के माध्यम से मैंने जो कुछ देखा उनका त्याग, उनकी सहनशीलता और माँ (नर्मदा) के प्रति समर्पण। वो मुझे हमेशा बहुत गहरे हृदय पर छाप छोड़ते हुए नजर आया।

दूसरा किसान की सहनशीलता ने मुझे हमेशा प्रभावित किया। उनका प्रत्येक परिस्थिति में संतोषपूर्वक जीवन जीना और कहना 'भैया भगवान को जितना देना था, दे दिया।' ये संतोष है ये मैंने किसान से सीखा। ये कुछ घटनाएँ है जिसका मेरे मन व हृदय पर गहरा प्रभाव पड़ा।

***नरपत लाल*:- सर आपके लेखन के अलावा अन्य पसंदीदा विषय क्या है? जिन्हें आप खाली समय में करना पसंद करते है।**

डॉ. श्रीराम परिहार :- पढ़ना-लिखना के अलावा कोई ज्यादा शौक नहीं है। मैंने यात्रा-वृत्तांत व संस्मरण लिखे हैं, अभी पुस्तक संस्मरण की आई है 'सुधियों के अमलतास'। बड़े लोगों के जीवन की कोई एक घटना मुझे स्पर्श कर गयी तो मैं उन घटनाओं और साहित्य को लेकर के मैंने संस्मरण लिखे। फिर उनकी देश-विदेश की यात्राओं पर यात्रावृत्तांत लिखे। मुझे 'ललित निबंध : स्वरूप एवं परंपरा' और 'निबंध का शास्त्र' लिखकर अपूर्व संतोष मिला। उनकी समीक्षा सुधी पाठकों के हाथ है।

नरपत लाल :- **किसी भी लेखक के लिए पहली पुस्तक का प्रकाशन बहुत भावुक करने वाला होता है। इस संबंध में आप अपने अनुभव साझा करें।**

डॉ. श्रीराम परिहार :- आदरणीय बड़े भाई के समान आदरणीय प्रमोद त्रिवेदी के स्नेह से मेरी पहली पुस्तक 1989 में आई। मेरी पहली पुस्तक का विमोचन भव्य समारोह के साथ खंडवा में हुआ था। इस पुस्तक के विमोचन में प्रमोद त्रिवेदी जी और भोपाल के बड़े समीक्षक प्रभाकर श्रोत्रिय जी आये थे। बिना किसी आर्थिक नुक्सान (जैसा आजकल चलता है) और ईश्वर की कृपा से 'ललित निबंध : स्वरूप एवं परंपरा' किताब घर से प्रकाशन हुई। 1992 ई. में नवगीत संग्रह भी आया है।

नरपत लाल :- **आपने सन् 1996 में संत सिंगाजी के शोधपूर्ण भजनों का संग्रह 'कहे जन सिंगा' नाम से पुस्तक प्रकाशित की। इसके संबंध में जानकारी दीजिए।**

डॉ. श्रीराम परिहार :- हमारे उधर गाँवों में तो रोज सिंगाजी के भजन होते ही है। मैं उनके बीच बैठता था। मैं झाँझ बजाना जानता हूँ। सिंगाजी के भजन भी गा लेता हूँ। इस सत्संग का असर मुझ पर भी पड़ा। सिंगाजी निमाड़ भाषा के बहुत बड़े संत है। कबीर के समकालीन है और निर्गुण परंपरा के संत है। सिंगाजी ने ईश्वर के बारे में अपनी अभिव्यक्ति इस प्रकार दी है-

"निर्गुण ब्रह्म है न्यारा, कोई समझे समझण हारा।

अरे निर्गुण ब्रह्म है न्यारा, कोई समझे समझण हारा।"

सिंगाजी अपने गुरु से विनती कर रहे है-

"सदा हो शरण सुख पाऊं गुरु जी मारा,

सदा हो शरण सुख पाऊं गुरु जी मारा।

बहुरी जन्म नहीं आऊं गुरु जी मारा,

सदा हो शरण सुख पाऊं गुरु जी मारा।"

इनके भजन अद्भुत है, जो मन को छूते हुए व्यक्ति को भावुक कर देते हैं और भगवान ने मुझे भावुक ही बनाया है। जरा-सी भी करुणा और ममता की बात आती है, विशेषकर मेरे भारत की बात आती है तो बहुत भावुक हो जाता हूँ। मेरा सौभाग्य है कि इस देश में जन्म लिया है। मेरी इच्छा है कि सौ बार भी यदि जन्म मिले, मनुष्य का नहीं भी मिले, किसी अन्य योनी में भी जन्म मिले तो भारत में ही मिले। इससे सुन्दर कोई देश नहीं हो सकता। सब राष्ट्र अपनी-अपनी जगह सुंदर हैं। सबका अपना देश अच्छा ही है। लेकिन भारत, भारत है। उसके समान में कोई नहीं।

नरपत लाल **:- सर, सिंगाजी के भजनों से ध्यान आया कि आपके साहित्य में ग्रामीण समाज और धर्म, रूढ़ियों, अंधविश्वास तथा आध्यात्मिक चिंतन व भक्ति भावना को लेकर क्या विचार रहे हैं ?**

डॉ. श्रीराम परिहार **:-** गाँव उजड़ रहे है, तो ये संस्कृति भी विरल हो रही है। मेरा अटल विश्वास है कि भारत के गाँव बचें रहेंगे तो भारतीय संस्कृति बची रहेगी। गाँव का बचा रहना, गाँव से पलायन, गाँव से विस्थापन को किसी तरह से रोकना चाहिए। जो सुविधाएँ शहर में हैं, जन समुदाय के सहयोग और सरकार के प्रयासों से वो सारी सुविधाएँ गाँव में हो तो गाँव से पलायन रुकेगा। खेती के उन्नत तरीके, जल, शिक्षा तथा बिजली की व्यवस्था हो तो कृषि से आधारित परिवार जो है उनके बच्चे बाहर नहीं जाएँगे। आजकल यह सत्य है कि माता-पिता खेती कर रहे है और जवान बच्चा होटल में जाकर काम कर रहा है।

नरपत लाल **:- सर, आपका व्यक्तित्व व्यापक रहा है। आप एक अध्यापक और लेखक के अलावा सामाजिक कार्यों एवं पर्यावरण की ओर भी विशेष ध्यान देते रहे है। आपके द्वारा किये गये विशेष कार्य जो हम सब के लिए प्रेरक हो।**

डॉ. श्रीराम परिहार **:-** मुझे वृक्षारोपण बहुत प्रिय है। अगर कोई वृक्ष की डाली भी तोड़ता तो बहुत दुःख होता है। मेरे महाविद्यालय में एक दिन बच्चे ने टहनी तोड़ डाली। मैं कक्षा से आ रहा था तो मैंने देख लिया, उसको पकड़ा। मैंने कहाँ इसने क्या बिगाड़ा था बताओं, तुमने इसकी टहनी क्यों तोड़ी? मैंने डांटा तो उस बच्चे ने तुरंत माफी माँग ली। उसका असर ये हुआ कि महाविद्यालय में लगाएँ हुए पौधों को कोई नुकसान नहीं पहुंचाता था।

राष्ट्रीय सेवा योजना के तहत ओंकारेश्वर में लगे शिविर में अधिकारी के नाते गया। नवीं शताब्दी का पूरा का पूरा एक मंदिर निकाल दिया। जिसमें 15 मूर्तियाँ और देवी का मंदिर था। वो पूरे मध्य प्रदेश में तीन जगह ही है। झाबुआ, ओंकारेश्वर और एक छत्तीसगढ़ में। वहाँ दिल्ली और भोपाल से पुरात्तव विभाग का एक दल आया हुआ था, जिसने इन मूर्तियों को खोजा था। मैंने सोचा शिविरार्थियों में ऊर्जा बहुत है, उनको सकारात्मक प्रयोग करें। गाँव के बच्चों को गाँव से यानी ज्ञान को कर्म से जोड़ने का मैंने काम किया। वहाँ बहुत वृक्ष लगाए और साइकिल रैली निकालकर वृक्षों के लिए बाबा आमटे के साथ बच्चों को खंडवा से भोपाल लेकर गया। अभी

भी खंडवा के आस-पास कई जगह ऐसी है जहाँ हमारे बच्चों के द्वारा लगाए हुए वृक्षारोपण के पौधे हैं। महाविद्यालय में प्राचार्य रहते हुए छात्रों को परिंडे लगाने के लिए प्रेरित किया।

फिर राष्ट्रीय सेवा योजना के माध्यम से छोटे-छोटे बाँध बनाने का काम हर साल किया। कुल मिलाकर मेरी कोशिश में ऐसा किया कि गाँव के बच्चे, युवा, समझदार लोग मिलकर के इस तरह से आप काम करें। स्थानीय संसाधनों के माध्यम से हम हमारी आवश्यकताओं की पूर्ति करें जिससे स्वावलंबी चरित्र का निर्माण होता हैं। मिट्टी से जुड़कर के चरित्र निर्माण करने की कोशिश मैंने राष्ट्रीय सेवा योजना के माध्यम से बच्चों में की।

***नरपत लाल*:- महोदय, आप एक ग्रामीण-परिवेश से संबंध रखते है और नर्मदा का आपके जीवन में बहुत महत्त्व है, आपने निबन्धों में नर्मदा नदी की प्राकृतिक आभा का कई बार विवेचन किया है। आज नर्मदा गाँव सरकार की खोखली नीतियों का शिकार होकर रह गयी है। इस बारे में आपके क्या विचार है ?**

***डॉ. श्रीराम परिहार*:-** अब तत्कालीन राष्ट्र और समाज की आवश्यकताओं एवं सरकारी परियोजनाओं के निर्णय के हिसाब से ये होना ही था सो हुआ लेकिन किसी नदी की जलधारा को रोककर उसके प्रवाह को दूषित करना मुझे आज भी उचित नहीं लगता। मेरा चिंतन है कि बड़े बाँध न बनाकर के छोटे-छोटे बाँध बना दिये जाते तो गाँव न उजड़ते न जंगल कटता। निमाड़ में सागौन (सागवान) की लकड़ी बहुत होती है, लकड़ी में सागौन का महत्व सोने के जैसा है। उसमें 100 साल तक भी उदई (दीमक) नहीं लगती। ऐसा जंगल कट गया है। ऐसे जंगल तो हम बसा नहीं सकते, बना नहीं सकते, उगा नहीं सकते, पाल नहीं सकते, बड़ा नहीं कर सकते। इन सब को देखकर के दुःख तो होता है।

अब उन बड़े-बड़े तालाबों में परिवर्तन से क्या हुआ कि उसका प्रवाह रूका तो जल प्रदुषित हुआ, जल निर्मल नहीं रहा। "रमता जोगी, बहता पानी" जीवन की एक गति रमता जोगी में है और प्रकृति की एक गति गतिशीलता में है। नर्मदा का जो प्रवाह है वो अभी भी मुझे रूकना अच्छा नहीं लगता। नदी के प्रवाह को मत रोकिए। नदी के प्रवाह को रोकना, जीवन के प्रवाह को रोकना है। वह तो माँ है, करुणामय, पालनहार है। उसकी बूँद-बूँद में जीवन शक्ति भरी हुई है। एक नदी सूखती है, तो संस्कृति सूखती है, जीवन की धारा सूखती है, जीवन का रस सूखता है, जीवन की संवेदना सूखती है, आस्था-श्रद्धा सूखती है, अनुष्ठान-पर्व सब खत्म होते हैं। एक नदी प्रकृति के बीच में बहने वाली कोई जलधारा नहीं होती। ये सब हुआ, मैंने बचपन में जो नर्मदा को देखा यानी मेरी युवावस्था तक जो देखा, उसके बाद जो नर्मदा हुई उसको देखने के भी दिन हो रहे है। दुःख तो होता है लेकिन अब जो हुआ, विकास, बिजली, पानी चाहिए। मैं कहता हूँ कि उत्तराखंड में भी तो छोटे-छोटे गंगा पर बाँध बनाकर उन्होंने बिजली पैदा की और बिजली वहाँ पर अतिरिक्त हो रही है। यदि हम नर्मदा पर छोटे-छोटे बांध बनाकर बिजली छोटे रूप में पैदा करते और छोटे-छोटे रूप में धीरे-धीरे सिंचाई करते हैं तो नर्मदा में तो

अभी भी हजारों पंप से खेती दो हजार एकड़ जमीन में हो ही रही है लेकिन अब नर्मदा का पानी गुजरात होते हुए राजस्थान के बाड़मेर तक पानी गया है, ये भी एक पक्ष है। यदि इतना बड़ा बांध नहीं बनता 'सरदार सरोवर' तो शायद पानी नहीं आता, तो हर पक्ष तो है। आज की मांग है, जो हुआ।

लेकिन फिर भी नर्मदा के जो जलाशय बने हैं, उसमें जन-सामान्य का कर्तव्य है उसको गंदा न करें। हमें कुछ जन-जागरूकता भी बहुत जरूरी है उसका दोहन करियें, शोषण मत करिये नदी का। उसमें शुद्धता का ध्यान तो सरकार हर घाट पर कुछ नहीं कर सकती। वह तो आम जनता को करना पड़ेगा, आम जनता को गणेश जी, माता की मूर्ति (आराध्य देवी) नवरात्रि में बिठाई जाती है को अतिरिक्त कुण्ड बना करके विसर्जित कर सकते हैं लेकिन नहीं हम मूर्ति नदी में डालेंगे, फूल, पत्ती, नारियल सब कुछ जो है। कपड़े, चप्पल, जूते छोड़ जाते हैं। मैंने नर्मदा के घाट पर देखा है। शनिश्चरी अमावस्या आती है, आधा ट्रक जूते, चप्पल छुटे हुए हैं। ये क्या है सारी गंदगी नर्मदा के पास और शुद्धता और पुण्य हम ले जाये। ये तो ठीक बात नहीं है। 140 करोड़ में से हर व्यक्ति का दायित्व है कि हम नदी के प्रति शुद्धता प्रदान करें। ध्यान रखें कि उसके जल को हम किसी भी तरह से प्रदूषित न होने देंगे। जागरूकता जरूरी है।

सरकार ने इस जनहित में कार्य किया है, वह बहुत अच्छा किया। सूखी धरती को नर्मदा नदी के माध्यम से पानी दिया। वह तो माँ है, समदृष्टि है उस के लिए पूरा भारत देश उनके बेटों के समान है। पानी, बिजली पहुँच रहे हैं, जन-सामान्य को भी उसके प्रति सतर्क होकर के उस जल को प्रदूषित नहीं करना चाहिए। प्रत्येक नदी की शुद्धता बहुत जरूरी है। नदी अपने आप जल को शुद्ध करती रहती है। उसके भीतर इतनी शक्ति, प्रक्रिया रहती है लेकिन उसमें जो गंदगी मिला रहे हैं उसको बंद कर दीजिए अपने आप नदी सालभर में शुद्ध हो जाएँगी। सालभर में क्या कोराना काल में तो हर नदियां शुद्ध हो गई थी।

नरपत लाल **:- सर, आपने अपने साहित्य में पर्यावरण का समग्र विवेचन किया है। पर्यावरण की वर्तमान दशा व मनुष्य से उसके अंतर्संबंधों किस प्रकार के हैं ?**

डॉ. श्रीराम परिहार **:-** पर्यावरण की वर्तमान दशा के बारे में तो सब जानते है। मैंने जैसे नर्मदा जी के बारे में बताया वैसे प्रत्येक व्यक्ति को जब तक चैतन्य नहीं आएगा तब तक हमें पर्यावरण को बचाना है, यानी जीवन को बचाना है। पर्यावरण को लेकर के बहुत सारी चीजें हैं कि छोटे-छोटे कामों के द्वारा पर्यावरण बचाया जा सकता है लेकिन वो नहीं हो रहा है। सबसे पहली बात जल को बचाने वाली बात है, जल नहीं बचा पा रहे हैं। जल का बहुत नुकसान व अपव्यय हो रहा है। हम ब्रश कर रहे है, सुबह नल खोल देते है और जब तक ब्रश नहीं करते है तब तक पानी चला जाता है। गाँव का एक आदमी एक लोटा जल लेता है, अपने दांत मांजता था और उस एक लोटे जल में मुँह धो लेता था, चेहरा साफ कर लेता था और बचे हुए पानी को पी लेता था। एक लोटे पानी में काम होता था, यहाँ एक बाल्टी पानी खराब हो रहा है। ये पढ़ा-लिखा आदमी कर रहा है तो अब ये कैसे होगा,

बहुत मुश्किल है। बड़ी-बड़ी होटलों में पानी का सबसे ज्यादा नुकसान हो रहा है। ये जो बोतलों में पानी बिक रहा हैं उसमें से आधा बोतल पानी सब यात्री बसों या रेलवें मे छोड़ जाते हैं ऐसा क्यों हो रहा है? कितना पानी, कितने हजारों लीटर पानी जो रोज बेकार जा रहा है। पेड़ काट रहे है, पेड़ लगा नहीं रहें है। प्रकृति से कुछ लो तो प्रकृति को दो भी तो सही और जब तक जागरूकता नहीं है कुछ नहीं हो सकता। जागरूकता कैसे आएगी, सारे आदमी पैसा कमाने के लिए लगे हुए है, प्रकृति के बारे में सोचते ही नहीं है। सोचेंगे नहीं तो जीवन संकट में पड़ेगा, पृथ्वी संकट में पड़ेगी। पृथ्वी तो कराहने लगी, ये सब ग्लोबल वार्मिंग से हो रहा है। गर्मी दिनों-दिन बढ़ती जा रही है।

***नरपत लाल*:- सर, आपकी पुस्तक 'संस्कृति सलिला नर्मदा' में नर्मदा को माँ का रूप दिया है। जिसमें प्रकृति के अनुपम सौन्दर्य का बखान किया गया है तथा आधुनिकता के बोध में नर्मदा के विनाश को भी आपने देखा है। नर्मदा नदी के बारे में आपके आत्मीय विचार से अवगत करावें।**

***डॉ. श्रीराम परिहार*:-** नर्मदा तो माँ है, मध्य प्रदेश की जीवन रेखा है। अब तो मध्यप्रदेश की क्या गुजरात और राजस्थान की भी जीवन रेखा बन गयी है। उसको बचाना हमारा कर्तव्य है। बाँध बना लिए लेकिन बाँधों में जो रूका हुआ पानी है, उसके शुद्धीकरण की बात तो होनी चाहिए, उसको गंदा नहीं होना चाहिए। स्नान करिए, आस्था रखिए, लेकिन उस में कचरा मत डालिये।

***नरपत लाल*:- सर, आपने स्वयं किसान का जीवन जीया है, आपके विचार में किसानों की वर्तमान समस्या किया है ?**

***डॉ. श्रीराम परिहार*:-** समय के हिसाब से किसान की समस्याएँ बदलती रहती है। पहले किसान के पास पैसा नहीं था, अब पैसा जरूर आया है लेकिन अब कर्ज कैसे चुकाया जाएँ, उसकी समस्या आ गयी है। कर्जा उसने ले लिया है। पहले किसान कर्जा लेकर के काम नहीं करना चाहता था। पिताजी कहते थे कि-

"चलना भला न कोस का, बेटी भली न एक।
कर्जा भला न सगा बाप का, जो रब राखे टेक।।"

कर्जा सगे बाप का भी ठीक नही होता है। आप देखिए, आप-हमारे घरों में जो पढ़े-लिखे लोग हैं, उसके घर में सब चीजें बैंक से ऋण लेकर की गई है। फिर ऋण नहीं चुकाया जाता है तो तनाव बढ़ता है, तनाव बढ़ता है तो घर में भी तनाव बढ़ता है, अशांति होती है फिर आत्महत्याएँ हो रही है। सबसे बड़ी बात है आज के समाज की उसके पास से संतोष रूप में बड़ा धन था, वह चला गया है, इस कारण सब हो रहा है।

गोधन, गजधन, बाजधन, और रतनधन खान।

जब आवै संतोष धन, सब धन धूरि समान।।

यह बात कबीर ने भी कही है।

नरपत लाल **:- सर, आपने कौन-कौन से देशों की विदेश यात्राएँ की है ? अवगत करावें।**

डॉ. श्रीराम परिहार **:-** एक संयोग ही था, नहीं तो किसान का बेटा नंगें पाँव खेत की जमीन में से आकर विदेश में रामकथा व भारतीय संस्कृति पर व्याख्यान दे रहा है। ये सब पुरुषार्थ, माता-पिता के पुण्य और नर्मदा माई का आशीर्वाद का प्रतिफल मैं मानता हूँ। भारत भूमि का सबसे बड़ा उपकार है कि मेरे ऊपर कृपा-हस्त रखा हुआ है। मैंने जर्मनी, स्विट्जरलैंड, फ्रांस, इंग्लैंड, श्रीलंका और कंबोडिया इस तरह से कुछ देशों की यात्राएँ की और वहाँ भारतीय संस्कृति पर व्याख्यान दिये। एक व्याख्यान मैनचेस्टर इंग्लैंड में भाषा पर हुआ, किस प्रकार भाषा हमारी संस्कृति की अभिव्यक्त करती है। जर्मनी में रामकथा और श्रीलंका में संस्कृति पर पर व्याख्यान हुआ है। इस देशों को देखकर लगा कि सब देश अच्छे हैं लेकिन भारत से अच्छा कोई नहीं है। भारत सबसे सुंदर देश है क्योंकि यहाँ विश्वशांति, भाईचारा और सद्भाव का संदेश सारे विश्व को दिया जाता है, इसलिए मुझे अच्छा लगता है।

नरपत लाल **:- सर, आपका लेखन बहुत व्यापक और गौरवपूर्ण है, लेकिन पुरस्कारों की संख्या कम दिखाई देती है। क्यों ?**

डॉ. श्रीराम परिहार **:-** मैंने पहले भी कहा कि मुझे सम्मान व पुरस्कार की कभी चाहना नहीं हुई क्योंकि मैं ललित निबंध का लेखक हूँ। इसलिए पुरस्कार की संभावना कम रहती है। निष्प्रभाव रूप से लिखता हूँ। मैंने दूसरी तरफ आँख उठाकर के भी नहीं देखा क्योंकि मैं इस विधा में इतना रम गया कि मुझे इससे अच्छी कोई विधा नहीं लगी। यद्यपि विधाएँ तो सब अच्छी है मनुष्य के एक जीवन की, प्रकृति के जीवन की और सृष्टि के जीवन की अभिव्यक्ति करती है। सभी विधाएं सम्माननीय, योग्य है लेकिन मेरे मन को रचने वाली ललित निबंध विधा जो लिखता रहा और लोगों का ध्यान गया। हजारीप्रसाद द्विवेदी जी का कथन याद है कि- "इतिहास देवता, आज नहीं, कल नहीं, काल के उस पार देखता है।" तो कभी न कभी समय की दृष्टि, सुधिजनों की दृष्टि जाती है तो पुरस्कार मिलते रहे और फिर मिले तो बहुत बड़े-बड़े पुरस्कार मिले। दिल्ली से लेकर केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा, उत्तर प्रदेश जैसे प्रतिष्ठित संस्थानों से पुरस्कार भी मिले। आजकल देखते है कि पुरस्कार पाने के लिए अनेक खेल चलते हैं, मै उसमें शामिल नहीं होता, **इसलिए भी आपको संख्या कम दिखाई देती है।** (हँसते हुए)

***नरपत लाल* :- सर, अंतिम प्रश्न, आपके अनुसार एक युवा लेखक को अच्छे साहित्य लेखन के लिए किन-किन बातों को ध्यान में रखना चाहिए ?**

***डॉ. श्रीराम परिहार* :-** मेरा तो माप या पैमाना अलग है कि दो चीजें साहित्य में रखनी चाहिए कि अपनी जमीन से जुड़ी हुई बातें साहित्य में होनी चाहिए। संस्कार पुराने हो सकते हैं लेकिन बात हमारी आज के समय में हो सकती है। हम अपने समय को हमारी सभ्यता और संस्कृति के परिप्रेक्ष्य में किस तरह से अभिव्यक्ति दें, इसकी चिंतनशीलता हमारे भीतर युवा लेखक को होनी चाहिए। दूसरा, युवा लेखक को पुरस्कार के लालच बिना अध्ययन बहुत करना चाहिए और अध्ययन के लिए उसे हमारे बहुत कुछ मानक ग्रंथ पढ़ने चाहिए। इनको पढ़ें बिना कैसे लेखन हो सकता है मुझे तो आश्चर्य होता है लेकिन पढ़ते नहीं है और महान बनना चाहते है।

मेरा विचार है कि आज काफी हाउस में बैठ करके कहानी की अवधारणा बना करके लिखने वाले लोग भी हमारे भारतवर्ष में है, लेकिन गाँव की नदी के किनारे नंगे पांव चलने वाला लेखक भी हमारे गाँव में है। दोनों के अनुभव में अंतर पाता हूँ, नदी के किनारे जो पैदल चल रहा है उसका अनुभव और उसका लेखन कुवारा लेखन होगा। काफी हाउस में बैठा हुआ उधार का लेखन होगा। ठीक है अपनी-अपनी रूचि अपने-अपने हिसाब से अपना कर्म कर रहे है। आजकल का लेखन कभी-कभी तो कोई भाग्य पर भी और कुछ संपर्क पर भी निर्भर होता है। सब चल रहा है लेकिन लोग लिख रहे हैं, ये अच्छी बात है। कुछ तो नये लेखकों में बहुत अच्छा लिख रहे है।

***नरपत लाल* :-** सर, साक्षात्कार के लिए दिए गए समय के लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

***डॉ. श्रीराम परिहार* –** *धन्यवाद।*

****